बेटी शैली की एक नई सुबह

नरेश अग्रवाल

बेटी शैली की एक नई सुबह

डॉ. नरेश अग्रवाल

शिक्षा से संबंधित अत्यंत उपयोगी पुस्तक

सर्वाधिकार सुरक्षित – डॉ. नरेश अग्रवाल

इस 'ई–पुस्तक' का प्रकाशन डॉ. नरेश अग्रवाल द्वारा स्वयं किया गया है।
पुस्तक के रूप में प्रकाशन– प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, द्वारा कुछ वर्षों पहले किया जा चुका है।
ISBN 81-7714-352-2
ई–पुस्तक प्रकाशन वर्षः सन् 2014

प्रकाशन संस्थान
4715/21 दयानंद मार्ग, दरियागंज,
नई दिल्ली – 110002
फोनः 23253234, 65283371

डॉ. नरेश अग्रवाल-एक परिचय

''नरेश का मिजाज एक चिन्तक का है, वे जीवनानुभवों की गहराई में उतरने का माद्दा रखते हैं।'' – इंडिया टुडे

1 सितम्बर 1960 को जमशेदपुर में जन्म।

अब तक स्तरीय साहित्यिक कविताओं की 6 पुस्तकों का प्रकाशन तथा शिक्षा सम्बन्धित 6 पुस्तकों का प्रकाशन। साहित्य जगत में रचित पुस्तकों को अच्छी ख्याति प्राप्त। 'इंडिया टुडे' एवं 'आउटलुक' जैसी पत्रिकाओं में भी इनकी समीक्षाएँ एवं कविताएँ छपी हैं। देश की सर्वोच्च साहित्यिक पत्रिका 'आलोचना' में भी इनकी कविताओं को स्थान मिला। लगभग सारी स्तरीय साहित्यिक पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित।

'मरुधर' रंगीन द्विमासिक साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन पिछले चार वर्षों से लगातार कर रहे हैं, जो आर्ट पेपर पर छपती है।

सन् 2014 में सूक्तियों पर 'सूक्ति–सागर' नाम से एक पुस्तक लिखी, जो भारतवर्ष में संभवतः यह पहला प्रयास होगा जब किसी लेखक द्वारा स्तरीय 1000 सूक्तियाँ हिन्दी भाषा में लिखी गयी।

'हिंदी सेवी सम्मान', 'समाज रत्न' सम्मान, अक्षर–कुंभ सम्मान आदि अनेक सम्मानों से सम्मानित।

पौधों की बोनसाई विद्या में पूर्ण रुप से पारंगत तथा हजारों र्दुलभ पौधे इनके संग्रह में शामिल। बोनसाई में अनेक पुरस्कार मिले।

शतरंज, ज्योतिष, हस्त रेखा एवं होम्योपैथी में कई साल तक विस्तृत अध्ययन।

लगभग 5000 पुस्तकें इनके निजी पुस्तकालय में संग्रहीत हैं।

फोटोग्राफी विद्या में पूर्ण रुप से दक्ष तथा अपने भ्रमण के दौरान हजारों तस्वीर का संग्रह इनके बेवसाईट पर उपलब्ध हैं। यात्रा के बेहद शौकीन तथा अनगिनत जगहों की यात्रा की।

सम्पर्क–

रेखी मेन्शन, 8 डायगनल रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर–831001

दूरभाष – 9334825981, 7488504892

ई. मेल – smcjsr77@gmail.com

बेवसाईट : www.nareshagarwala.com

भूमिका

'बेटी शैली की एक नई सुबह' एक नये ढंग की कृति है। इसमें संगृहीत रचनाओं में बोधकथा तथा गद्यात्मक काव्य दोनों का रसात्मक समन्वय देखा जा सकता है। यह बेटी से वार्तालाप कोई सामान्य बातचीत नहीं है। इसकी पृष्ठभूमि में लेखक के द्वारा संचित वह अनुभव–संपदा है, जो, जो सूक्ष्म पर्यवेक्षण से ही किसी को प्राप्त हो पाती है। श्री नरेश अग्रवाल को वह दृष्टि प्राप्त है, जिस पैनी दृष्टि से कोई अपने चतुर्दिक का पर्यवेक्षण कर पाता है। यह स्मरणीय है कि नरेशजी मूलतः एक व्यवसायी हैं और जो व्यवसायी होता है, वह एक सफल पर्यवेक्षक और मनोविज्ञ भी होता है। परंतु, प्रत्येक व्यवसायी को मृग की तरह ही अपनी नाभी की इस कस्तूरी का पता नहीं रहता। नरेश जी अन्य व्यवसायियों से इसी अर्थ में पृथक हैं, क्योंकि इन्हें अपनी भीतर छिपी इस 'कस्तूरी' का ज्ञान है। इसीलिए तो वह कस्तूरी की इस सुगंध से सबको सुवासित करने के लिए सक्रिय भी हैं।

'बेटी शैली की एक नई सुबह' एक विशिष्ट कृति है। यह बातचीत शैली को संबोधित है, लेकिन यह केवल उसके लिए ही नहीं है। यह प्रत्येक शैली और शैल के लिए है–वह चाहे भारत में रहता हो या संसार के किसी अन्य देश में। इसे अतिशयोक्ति न माना जाय, तो मैं यह भी कहना चाहूँगा कि यह वार्तालाप वैसे प्रत्येक व्यक्ति के लिए है, जो सफल, सार्थक और प्रगामी जीवन का आकांक्षी है।

श्रवण कुमार गोस्वामी
सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली–1

अपने चुंबकत्व से

एक अच्छा भविष्य अपने चुंबकत्व से हमेशा हमें ललचाता रहता है और हमें सारे कष्टों को सह जाने की प्रेरणा और ताकत देता है। जैसे कहता हो तुम अँधेरे में हो और मैं जिस प्रकाश में हूँ उस ओर अपने कदमों को अग्रसर करो। यही चुम्बकत्व हमारे लिए अंधकार से प्रकाश यानि एक अच्छे भविष्य को पाने की तड़प बन जाता है और हम रात–दिन मेहनत करने लगते हैं।

❖❖❖

विद्यार्थियों की वर्तमान स्थिति

एक कक्षा में जो पढ़ाई होती है उसे हर विद्यार्थी अलग-अलग तरीके से अपने दिमाग में बैठाता है। यानि अगर एक पाठ्यक्रम को पढ़ाने के बाद छात्रों से कहा जाए कि वे पढ़ाए गए पाठ के विषय में लिखे तो हर छात्र के उत्तर अलग-अलग होंगे। किसी में बतायी गयी सारी बातों का उल्लेख होगा तो किसी में आधी तो कई बहुत थोड़ा-सा ही लिख पायेंगे। सिर्फ इस एक तरह की परीक्षा से ही उनके उत्तर देखकर सारे विद्यार्थियों की वर्तमान स्थिति का पता आसानी से लग जाता है और उन सब के लायक लाभकारी सलाहें उन्हें दी जा सकती है। साथ ही शिक्षक अपने पढ़ाने के तरीके में बदलाव कर सकते हैं, ताकि कमजोर छात्र भी उनकी पढ़ाई को अच्छी तरह से समझ सके।

❖❖❖

अनुवाद करना

किसी एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना एक जटिल कार्य होता है। चाहे वो भाषा अपने देश की हो या विदेश की। सभी भाषाओं में अपनी भावना, अलंकार, लय तथा वे सारी चीजें मौजूद होती हैं जो एक अच्छी अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक है। अब अनुवाद करते समय भी इन सारी बातों का ध्यान रखना होता है, जो पढ़ने का सुख हमें इसकी मूल भाषा में मिलता था वही अनुवादित भाषा में भी मिले। इसके लिए अनुवादक को दोनों भाषाओं का मर्मज्ञ होना चाहिए ताकि अनुवाद के बाद विषय–वस्तु में संप्रेषणीयता के दृष्टिकोण से कोई फर्क नजर न आए।

❖❖❖

ज्ञान के प्रभाव से

पैसे के अभाव में दियासलाई भी महँगी लगती है और पैसे अधिक हों तो बहुत सारी शौक की चीजें भी इससे खरीदते रहते हैं हम। हर वक्त हमारा ध्यान रहता है कि घर को किस तरह से सजाया जाए और एक अच्छी जिन्दगी जीयें हम। वैसे ही जब तुम्हारे पास ज्ञान का भंडार रहता है तो तुम उसे खूब अच्छी तरह से खर्च करना चाहती हो। जैसे सब कुछ सजाकर अच्छी तरह से लिखना, बोलना एवम् व्यवहार में अपनी कुशलता दिखलाना आदि और तुम अपने ज्ञान के प्रभाव से ही दूसरे लोगों को चमत्कृत कर देती हो।

❖❖❖

एक पिता

एक पिता हर दिन सोचता है उसके बच्चे के पास वो सब सामग्री हो, सारी सुविधाएँ हों, जिससे वो अच्छी पढ़ाई कर सके और अपने भविष्य का निर्माण कर सके। वह यथाशक्ति इन सबों को पूरा करने के लिए सब कुछ करता है, यहाँ तक की अपने सामर्थ्य से बहुत अधिक खर्च करने के दबाव में कई बार वह नींद को भी भूल जाता है। बच्चों को इतना सहारा दिया जाना जरूरत से कहीं अधिक है, और इसके एवज में अच्छी पढ़ाई और अच्छा चरित्र ही उनसे माँगा जाता है।

❖❖❖

असामान्य को भी सामान्य कर देता है

एक सधे हुए हाथ कुछ ही देर में कंकड़ और अनाज को अलग कर देते हैं और नये हाथ केवल कंकड़ की पीड़ा को ही अँगुलियों में महसूस करते रह जाते हैं। अनुभव और परिश्रम असामान्य को भी सामान्य कर देता है। सभी के पास रंग होते हैं, लेकिन उनसे अच्छे चित्र कुछ ही लोग बना पाते हैं।

❖❖❖

कम से कम तकलीफ हो

जिस व्यक्ति को फाँसी की सजा हो चुकी है वह भी चाहता है कि मरते वक्त उसे कम से कम तकलीफ हो। इससे साफ मालूम पड़ता है कि हम अपने शरीर से कितना अधिक प्रेम करते हैं तथा उसे जरा–सा भी कष्ट नहीं देना चाहते। उसके पूरे आराम की चिंता करते हैं। इसलिए आज हम जो भी कर रहे हैं, वो इस उम्मीद में की कल हमारा आरामदेह होगा। हमें सभी तरह के साधन उपलब्ध होंगे जैसे बड़ा घर, गाड़ी, पैसे, अच्छा रहन–सहन आदि।

❖❖❖

जितनी अधिक मजबूत रहोगी

जब थैला छोटा होता है तो उसमें कम सामान अटते हैं और भार भी कम ढोना पड़ता है। जब थैला बड़ा होता है तो सामान भी अधिक अटते हैं तो भार भी अधिक ढोना पड़ता है। साथ ही थैला बड़ा हो और सामानों से भरा हो तो उसे मजबूत भी होना पड़ेगा। इसलिए तुम जितनी अधिक मजबूत रहोगी उतना ही अधिक जानना, पढ़ना और समझना संभव हो सकेगा। कमजोर और रुग्ण दिमाग से अधिक पढ़ाई के बोझ को उठाने की कल्पना करना भी बेकार है। अतः शरीर को स्वस्थ बनाये रखना बेहद जरूरी है।

❖❖❖

ये तीनों चीजें

पानी में सभी चीजों को आपस में मिला देने का गुण है, आग में सभी चीजें नष्ट कर देने का गुण है और हवा में चंचलता का। ये तीनों चीजें हमारी जिंदगी की सबसे बड़ी आवश्यकता है ये तीनों चीजें ही हमारी जिंदगी को अत्यधिक प्रभावित करती है।

❖❖❖

सबसे अधिक उचित

लाल रंग की स्याही किसी भी कलम में तुम भरो, वह लाल लिखने लगेगी। उसी तरह काली स्याही किसी भी कलम में भर दो, वह काला लिखने लगेगी। इसी तरह गुण और अवगुण हैं जो भी इन्हें दिमाग में जिस तरह से भरेगा, वे उसी तरह से काम करने लगेंगे। इस तरह से जो तुम्हारे लिए सबसे अधिक उचित और लाभकारी है उसी का चुनाव श्रेष्ठ है, बाकी को छोड़ देना ही उचित है।

❖❖❖

वार्तालाप के दौरान

जब तुम शुरू–शुरू में इत्र लगाती हो तो इसकी खुशबू काफी तेज होती है फिर धीरे–धीरे कम और रोज इसे लगाने पर तुम्हें मालूम भी नहीं होता कि तुमने इत्र लगाया है। लेकिन दूसरों के लिए यह खुशबू हमेशा मौजूद रहती है। इस तरह से बहुत–सी पढ़ी हुई बातें भी जो तुम्हें कभी याद भी नहीं आती, कहीं छुप गयी हों जैसा लगती है लेकिन जब वार्तालाप के दौरान या किसी काम के सम्पादन में अचानक अपना ओज सबके सामने प्रकट कर सबको चकित कर देती हैं। ये बातें किस तरह से दूसरों पर प्रभाव डालती हैं यह तुम्हें पता भी नहीं चलता, लेकिन वे अपना प्रभाव जरूर दूसरों पर छोड़ रही होती हैं।

❖❖❖

देने की आकांक्षा

अच्छे हैं ये पशु, जीव–जंतु और पेड़–पौधे आदि जिनका स्वभाव ही कुछ न कुछ देना है और उनके देने की आकांक्षा को कोई रोक भी नहीं सकता। पशु अपने आप दूध देते हैं, भेड़े अपना ऊन, तोते अपनी सुंदरता, फूल अपनी खुशबू जबकि फल धीरे–धीरे स्वाद से भर जाते हैं। उसी तरह अच्छे लोग, सद् गुणों से भरे अपने विचार बाँटते रहते हैं।

❖❖❖

एक अच्छा साहित्य

सभी लोग तुम्हें एक जैसा स्नेह या प्यार नहीं दे सकते, अलग-अलग रिश्तेदारों से अलग-अलग तरह का प्यार मिलता है। ये विज्ञान, व्यवसाय, गणित, कम्प्यूटर आदि विषय तुम्हारी भावनात्मक भूख को शांत नहीं कर सकते, न ही जिन्दगी को अच्छी तरह से चलाने के लिए कोई मार्गदर्शन कर सकते हैं। लेकिन एक अच्छा साहित्य तुम्हारे मन में उठे बहुत सारे सवालों का हल एवम् दुविधाजनक स्थितियों से मुकाबला करना सिखाता है साथ ही तुम्हें एक अच्छा मनुष्य, जो समझदार, सभ्य एवम् सहृदय है, बनने के लिए प्रेरित करता है।

❖❖❖

ज्ञान पाने की पुकार

जिनकी इच्छाएँ मंद होती हैं उनके ज्ञान पाने की पुकार भी धीमी होती है, पुस्तकों पर नजरें गड़ाने में भी गहराई नहीं होती। कहते हैं जड़े जितनी गहरी और फैली हो पेड़ भी ऊपर से उतना ही बड़ा और फैला हुआ होता है। जिनके भीतर ज्ञान की गहराई है उसका तेज भी बाहर उतना ही दिखाई देता है। ज्ञान की सीमाएँ इतनी विस्तृत है कि हर बार तुम्हें लगता है कि अभी तक यह अनछुआ है, तुम इसे नहीं जानती। यह उसी तरह है जैसे जड़ों के लिए मिट्टी के बीच विचरण करने के लिए अपार जगह होती है। बस उसे अपने आप को चारों ओर सक्रिय बनाये रखना होता है।

❖❖❖

फूलों की खुशबू

परिवार के सिर्फ एक व्यक्ति के गुणों के कारण, दूसरे सभी सदस्यों का महत्व बढ़ जाता है। रात–रानी के एक पेड़ के फूलों की खुशबू से सारा बगीचा खुशबूदार हो जाता है। एक पुच्छल तारा सारे आकाश को आकर्षण का केंद्र बना देता है और एक अच्छा खिलाड़ी अपने अच्छे खेल से हजारों लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। अगर तुममें भी इच्छा शक्ति और लगन है, तुम भी एक दिन अपने बल पर सभी के आकर्षण का केंद्र बन सकती हो।

❖❖❖

प्रतिभा

एक ताकतवर सेना के सामने दूसरी कमजोर सेना आत्मसमर्पण कर देती है। अगर तुममें शक्ति है और सामर्थ्य है तथा उसका प्रदर्शन अच्छे तरीके से दूसरे के सामने कर देती हो तो वह तुम्हारी सूझ–बूझ तथा ज्ञान का कायल हो जाता है। उसकी समझ में आ जाता है कि तुम में कितनी प्रतिभा है और तुम्हें किस तरह के महत्वपूर्ण कार्य सौंपे जा सकते हैं। इस तरह से तुम्हें पद, नाम और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

❖❖❖

बिना रियाज के

लिखना एक मानसिक व्यायाम है जो मन को मजबूती तो प्रदान करता ही है साथ–साथ जो भी तुम जानती हो उसे क्रमबद्ध कर कागज पर उतारने का अभ्यास भी है। यह वैसे ही है जैसे संगीत के सारे सुरों की जानकारी होने पर भी बिना रियाज के स्वर सुरीले बनकर गले से नहीं उतरते।

❖❖❖

स्मरण

एक घनिष्ठ दोस्त को गले लगाकर बिछुड़ने का क्षण, एक स्वादिष्ट फल का स्वाद, एक खरगोश जैसे कोमल जीव को गोद में लेने का अनुभव, किसी की आर्थिक मदद की याद आदि ये कितनी ही घटनाएँ हैं जो तुम्हारे साथ घटी होगी और उनका आनंद तुम में मौजूद होगा। ऐसी ही असंख्य घटनाओं के भावनात्मक अनुभव से तुम्हारा हृदय लबालब रहता है। इनके स्मरण मात्र से भी मन खुश हो जाता है। इसलिए जितने अधिक से अधिक इस तरह के स्मरण तुम्हारे पास मौजूद होंगे, उतनी अधिक भावनात्मक समझ तुम्हारे भीतर होगी अर्थात् दुनिया की चीजों से अपना अधिक से अधिक भावनात्मक जुड़ाव रख सकोगी।

❖❖❖

आँखें पुस्तकों पर

घोड़े जरूर तेज दौड़ जाते हैं समय आने पर सड़कों पर, वैसे ही आँखें पुस्तकों पर, लेकिन इस तेजी में आँखों से छूट जाता है, कितना कुछ देखना और समझना भी। परीक्षा के ठीक समय या एक या दो दिन पहले की जाने वाली तैयारियाँ भी कुछ इसी तरह की ही होती है।

❖❖❖

एक सही पारखी

सोना जब अपनी शुद्ध अवस्था में होता है उस वक्त उसका मूल्य अधिकतम होता है लेकिन खोट मिला देने पर अपना मूल्य खो बैठता है। इसलिए जो सुन्दर एवं अच्छी बातें हैं उन्हें जब विकृत लोग हमारे सामने रखते हैं तो उनके अर्थ को ही बदल देते हैं। क्योंकि वे इन्हें ठीक तरह से नहीं जानते। एक सही पारखी ही प्राचीन मूर्तियों का मूल्य जानते हैं और पूस्त दर पूस्त उसकी रक्षा करते हैं।

❖❖❖

अच्छी बातों की मालकिन

दूसरों की अच्छी बातों को अपने में कैद करना अगर तुम्हारी आदत बन जाए तो एक दिन पाओगी, तुम बहुत सारी अच्छी बातों की मालकिन हो गयी हो और इन कैद बातों से, बहुत सी अच्छी–अच्छी बातों का भी जन्म अपने आप होने लगेगा, तुम्हारे भीतर।

❖❖❖

मुँह खोलते ही

तुम कितने ही अच्छे कपड़े पहनकर सज–धज कर बैठी हो, लेकिन बातचीत करने का सलीका नहीं है तो मुँह खोलते ही तुम्हारा सारा सौन्दर्य खत्म हो जाएगा। एक शुद्ध सोने को भी जब तक अच्छा कारीगर जेवरात का सुन्दर रूप नहीं दे देता तब तक वह एक धातु ही है बस। लकड़ी और पत्थरों में की गयी नक्काशी के बाद ही उनका मूल्य बढ़ जाता है, वरन् वे बेकार हैं। इस तरह तुम देखोगी कि अच्छे ज्ञान एवं कला की ही जीत होती है, इनके अभाव में चीजें थम गयी सी लगती है, बिल्कुल प्रभावहीन।

❖❖❖

मानसिक आघात

ये दोस्तों के झगड़े, पारिवारिक कलह, किसी चीज का खो जाना आदि मानसिक आघात है। ये दिमाग के संतुलन की स्थिति को क्षत–विक्षत करते हैं, लेकिन अगर तुम्हारा मन सुदृढ़ है और किताबों की पढ़ाई में ही ज्यादा लिप्त है तो फिर इस तरह के आघात अक्सर तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं पाते।

❖❖❖

उनका हिलना-डूलना

एक पेड़ के वश में यह जरूर होता है कि वह पत्ते पैदा करे और डालियों से उन्हें चिपकाये रहे, लेकिन उनका हिलना-डूलना हवा की गति पर ही निर्भर होता है, पेड़ पर नहीं। इसलिए हमारा सब कुछ अच्छा करने पर भी हमारी गुणवत्ता को बहुत सी बाहरी चीजें भी प्रभावित करती रहती हैं। इनके कारण कभी आशा से अधिक फल मिल जाता है तो कभी विपरीत भी। लेकिन इस बाहरी विपरीत परिस्थितियों के बारे में अधिक सोचकर भी थोड़ा-सा भी सर दर्द होने पर अपने को बिस्तर पर निढ़ाल कर लेना उचित नहीं होगा।

❖❖❖

युद्ध का डर

दहशत एक सन्नाटा है जो खोजता है हमारे भीतर खाली जगह ताकि, वह उसमें वास कर सके। एक चीख से भी घबरा जाते हैं हम, निकल आती है बाहर हमारी आँखें, कान को भी जैसे शरीर से बाहर हो रहे का हाल जानने की तलाश और शरीर चौकन्ना जैसे बिल्कुल तैयार किसी भी आपदा को सहने को और भय बैठ गया होता है, तब तक हमारे भीतर। इस तरह का होता है एक युद्ध का डर, जिसमें हम कहीं भी शामिल नहीं परंतु लगता है, कभी भी हम इसके दुराग्रह के शिकार हो सकते हैं। इन स्थितियों में दीवार ही केवल हमारा सहारा होती है, बस इसी के सहारे हम अपने आपको सुरक्षित महसूस करते हैं, लेकिन मौत उन्हें ही अधिक डराती हैं, जो इससे अधिक भयभीत होते हैं।

❖❖❖

अपनी उन्नति को जाँचना

थोड़े–थोड़े दिनों में प्राप्त हुई शिक्षा से अपनी उन्नति को जाँचना तथा प्राप्त हुई शिक्षा को उपलब्धि मानकर खुश होना अच्छी बात है, लेकिन इसे कोई पूर्णविराम नहीं समझना चाहिए बल्कि पूर्णविराम के बाद फिर से एक नये वाक्य का लिखा जाना और इनकी श्रृंखला बनाते हुए कभी न खत्म होने वाले पूर्ण विराम की ओर बढ़ना ही तुम्हारा ध्येय है।

❖❖❖

आत्म विश्लेषण

कभी–कभी प्रश्न उठते हैं आखिर क्या हो तुम, क्या है तुम्हारी जानकारियाँ, कहाँ तक है तुम्हारी समझ और एक उम्मीद भरी जगह तक पहुँचने के लिए तुमने जो अपना मार्ग चुना है, उसमें कहाँ तक पहुँची हो तुम अब तक। ये सब आत्म विश्लेषण की बातें हैं और अपने को जाँचने का राज है। अगर तुम सचमुच होश में हो तो मनगढ़ंत सपनों से अपने को आत्ममुग्ध न करके, अपनी स्थिति की सच्चाई की ओर झाँकने का प्रयास करोगी।

❖❖❖

अवगुणों को ढंकने के लिए

एक कमजोर वृक्ष से छोटे एवम् कम रंगों वाले फूल ही पैदा होते हैं और कई बार खिलने से पहले ही झड़ जाते हैं। कमजोर वृक्ष का न ही फैलाव होता है और न ही उनसे फलों की कामना की जा सकती है। जब तुम सचमुच में कमजोर हो तो फिर अधिक आशा करना बेकार है यह तो और भी खराब होगा, अगर तुम्हारे अवगुणों को ढकने के लिए आलोचना करने के बजाए तारीफें ही की जाएँ। जैसा एक कमजोर दीवार को सुन्दर–सुन्दर रंगों द्वारा ढक दिया जाता। जबकि पहले सुधार और फिर उसके बाद तारीफें होनी चाहिए।

❖❖❖

कला की बारीकी

एक सधे हुए हाथ सब्जियों को उसी तरह से काटते हैं, जिस तरह से वे पकने पर स्वादिष्ट लगें न कि मूर्खों की तरह जो सब्जियों को इतना बारीक काट देते हैं कि उनका कोई स्वाद ही नहीं रह जाता। एक ही पत्थर को अलग-अलग कारीगर अलग-अलग आकार देते हैं लेकिन कला की बारीकी जिसमें सबसे अधिक होगी वही आकृति सबसे अच्छी होगी। उत्तर तो सभी देते हैं लेकिन तुम्हारे उत्तर में कुछ सधे हुए हाथों जैसी कुछ विशेषता होगी उसे ही श्रेष्ठ उत्तर माना जाएगा।

❖❖❖

निर्माण करने की ताकत

तुम जब किसी से अचानक मिलती हो लगता है तुम दोनों अच्छी दोस्त बन सकती हो क्योंकि, दोनों के विचार मिले, दोनों का मन मिला और तुम एक होने की दिशा में मुड़ने लगी। इसी तरह से जो पाठ तुम्हें अच्छे लगते हैं और लगता है तुम उन्हें ठीक से समझ रही हो तो फिर उससे घनिष्ठता होनी निश्चित है। जैसे बालू और सीमेंट मिलने पर उनमें जो दीवारों को जोड़ने की अद्‌भुत क्षमता आ जाती है, वैसे ही जब तुम्हारा मस्तिष्क और पाठ एक दूसरे से अच्छी तरह से मिल जाते हैं तो उसमें भी निर्माण करने की ताकत आ जाती है।

❖❖❖

ज्ञान की ताकत

तरह–तरह की मुसीबतें आती रहती हैं हमारी जिन्दगी में और हम अपने उपलब्ध ज्ञान का इस्तेमाल कर अक्सर सफल होते हैं लेकिन कभी–कभार असफल भी हो जाते हैं। लेकिन हमारा ज्ञान जिस तरह का भी हो, हम उसे कोसते नहीं हैं न ही कभी उसे दूर रखने की कोशिश करते हैं। यही ज्ञान की ताकत है, क्योंकि यही तुम्हारी ताकत है।

❖❖❖

शिक्षित लड़की का पिता

एक शिक्षित लड़की का पिता हर समय एक तसल्ली में रहता है कि शादी के बाद वह ससुराल के नयेपन और बदलाव से आसानी से मुकाबला कर लेगी साथ ही अगर कभी अभाव की स्थिति आ भी जाये तो वो टूटेगी नहीं, जीवन–यापन के लिए कोई न कोई रास्ता जरूर निकाल लेगी या जरूरत पड़ी तो अपने पति के कामों में भी मदद करेगी। उसको दी गयी शिक्षा उसके हर टूटते पल में उसका सहारा रहेगी।

❖❖❖

सामूहिक विचार परामर्श

सभी के पास युक्तियों और अपने–अपने ढंग से काम के सम्पादन करने की अटकलें भी इसलिए जब कुछ लोग आपस में मिलकर किसी समस्या पर चर्चा करते हैं तथा हल निकालना चाहते हैं तो अचानक ही कोई ऐसी बात बोल देता है, जिससे समस्या के हल करने का तरीका मिल जाता है। इसलिए इस सामूहिक विचार परामर्श का रिवाज आधुनिक काल में अधिक बढ़ा है तथा इसमें सभी को बोलने एवं अपनी बात रखने का समान अवसर दिया जाता है।

❖❖❖

अनुशासन का सही पालन

एक कुत्ते का सिर्फ स्वामिभक्त होना ही काफी नहीं है बल्कि उसका हमेशा चुस्त रहना, घर की निगरानी करना, अनुशासन में रहना, जरूरत से अधिक न भौंकना आदि गुण भी उसमें होने चाहिए। यानि कोई भी चीज अपनी संपूर्णता में ही सुंदर कहलाने योग्य है, पहले नहीं। इसलिए कक्षा में सिर्फ तुम्हारा प्रथम आना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि विद्यालय के खेलकूद में, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में, अनेक लोगों के बीच संबोधन करने में, सबसे सद्भावना बनाये रखने में तथा जब विद्यालय के अनुशासन का सही पालन करती हो तभी एक अच्छी छात्रा कहलाती हो।

❖❖❖

एक शब्दकोष में

एक शब्दकोष में हजारों शब्द होते हैं सभी के कुछ न कुछ अर्थ होते हैं। सभी के अर्थ हमारी रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़े हैं। जितनी सारी हमारी भावनाएँ, जितनी सारी हमारी क्रियाएँ, जितने सारे हमारे सोच और जितने सारे पदार्थ उपलब्ध हैं, सभी को व्यक्त करने के लिए शब्द। यही तो है भाषा, ताकि जो भी घटना हो उसके अनुरूप शब्दों का सहारा लेकर उसे सही–सही व्यक्त किया जाए। दुर्घटनाओं के लिए शोक से भरे शब्द, खुशियों के लिए हँसी मजाक के और युद्ध के लिए खून–खराबे जैसे शब्द। तुम डिक्शनरी पलटती जाओ और प्रत्येक शब्दों को पढ़ो, तुम्हें लगेगा इसका ही इस्तेमाल तुम वर्षों से करती आ रही हो।

❖❖❖

अधूरे कामों की श्रृंखला

एक काम तब तक अधूरा रहता है जब तक वो पूरा नहीं हो जाता और उसके पूरा होते ही अत्यधिक खुशी होती है। लेकिन सचमुच में तुम मेहनती छात्रा हो तो फिर तुम्हारे पास एक नहीं बहुत सारे अधूरे काम हमेशा मौजूद होते हैं। सभी क्रम दर क्रम पूरे होते जाते हैं फिर नये आते जाते हैं। एक कठिन पाठ को पूरी तरह से हल कर लेना अपार खुशी देता है, इसलिए तुम इन सबका निपटारा करती जाती हो। यह सच है कि जिस दिन तुम्हारे पास अधूरे कामों की श्रृंखला नहीं रहेगी, उस दिन तुम गौर करोगी, तुम्हारे में आलस आ गया है और तुमने काम करना बंद कर दिया है या उसकी ओर से आँखें चुरा रखी है।

❖❖❖

किस दिशा की ओर

कभी–कभी लोग दूसरों के काम पर विश्वास नहीं करते हैं तो फिर उनके द्वारा किये जा रहे कामों का सारा ब्यौरा, उससे संबंधित कागजात उन्हें दिखलाये जाते हैं ताकि उन्हें विश्वास हो जाए कि जो काम हो रहे हैं वे सही ढंग से हो रहे हैं। यह भी एक–एक अच्छी पद्धति है कि तुम स्वयं को निरीक्षक मान कर, जो भी तुम पढ़ती हो हर दिन उसका ब्यौरा दर्ज करो और उस डायरी में पढ़ते हुए कौन–कौन से विषय तुम ठीक से समझ न पायी या वे तुम्हें अच्छे नहीं लगे, इन बातों का भी जिक्र हो। एक महीने के अंत में तुम्हें अच्छी तरह से मालूम हो जाएगा कि तुम्हारी प्रगति किस दिशा की ओर है तथा पढ़ाई पर तुमने कितना समय दिया और कितनी मेहनत की।

❖❖❖

तुम्हारे प्रति मेरी आशाएँ

तुम जानती हो तुम्हारे प्रति मेरी आशाएँ क्या–क्या हैं। बस अवगुणों को गुणों से निकाल देने की तुम्हारी क्षमता मात्र ही तो मुझे देखनी है। तुम जानती हो कि कंकड़ के अलग कर देने के बाद बोरियाँ केवल अनाज का ही बोझ ढोती है, जिसके लिए ही वे बनी हैं।

दायित्व का बोझ

एक बूढ़ा आदमी अपनी बचायी हुई सारी चीजों के प्रति बेहद सर्तक होता है, क्योंकि अब पाने के लिए प्रयास कम है लेकिन जो भी है उसके पास, उसे बचाये रखने का प्रयास ही अधिक करना है। यह कितने आश्चर्य की बात है कि सारी चीजें हमारी ही बनायी हुई और फिर भी वे सुरक्षित नहीं हैं और सारी सुरक्षा का भार हमारे सर पर है। इसलिए इस दुनिया में तुम जो भी अर्जित करती हो, उसे तुम्हें ही सँभाल कर रखना है, कोई दूसरा उसकी हिफाजत नहीं करेगा और करेगा भी तो तुम्हारी ही देख–रेख में और निर्देश पर। यानि हर समय कर्त्ता तुम ही हो। यह ही है दायित्व का बोझ है, यानि जिन चीजों की भी तुम स्वामिनी हो सभी की रक्षा का दायित्व तुम्हारा है इसलिए सफलता तो अर्जित करो, प्रगति भी करो लेकिन दूसरों से उम्मीद मत रखो की वे तुम्हारी सफलता को सँभालेंगे बल्कि तुम्हें अपनी सफलता खुद ही सँभालनी होगी।

❖❖❖

अविश्वसनीय क्षमता

जब मजदूरों को पैसे घंटों के हिसाब से नहीं बल्कि काम की पूर्ति के आधार पर दिये जाते हैं तो उनके काम करने की गति में तीव्रता आ जाती है। इतनी तीव्रता की वे थक गए हैं या नहीं या शाम हो गयी है या नहीं, किसी बात की भी चिंता नहीं रहती। यह पैसों की ऐसी ललक है कि उन्हें निचोड़ कर रख देती है, लेकिन साथ–साथ हासिल होता है एक काम को बहुत तेजी से करने का अभ्यास तथा आदत काम में लगे रहने की। ऐसी लालच से अगर न काम करने वाले भी काम करने लगे तो क्या बुरा है? अगर तुम्हारे मन में भी किसी कारणवश इस तरह के कोई माध्यम से कुछ बड़ा करने की ललक पैदा होती जाती है तो, फिर देखो अपनी गति और अपने में बदलाव। तुम्हें महसूस होगा तुममें यह अविश्वसनीय क्षमता, आखिर में कहाँ छुपी हुई थी?

❖❖❖

मूकदर्शक की तरह

एक रेलगाड़ी में बैठने के बाद हमारे हाथों में कुछ भी नहीं होता बस एक मूकदर्शक की तरह रास्ते को गुजरते हुए देखते भर रहना होता है। परीक्षा के दौरान भी हम इतने ही सिमट कर रह जाते हैं, जबकि हम जानते हैं हमारे पास ज्ञान बहुत सारा है, लेकिन निश्चित समय में केवल पूछे गए प्रश्नों के उत्तर ही हमें देने होते हैं। हमारा ज्ञान कसमसाकर रह जाता है कि उसके लिए न ही पर्याप्त जगह है और न ही समय। कई बार अफसोस होता है कि वे प्रश्न क्यों नहीं पूछे गए, जो अधिक महत्वपूर्ण थे और उनके उत्तर हम अच्छी तरह से जानते थे। लेकिन सब कुछ हमारे हाथों में नहीं होता।

❖❖❖

परिपक्वता के अनुसार

गधे को पैदा होते ही काम पर नहीं लगाया जाता न ही पेड़ की पतली डालियों पर झूले बांधे जाते हैं। धीरे–धीरे उनकी परिपक्वता के अनुसार सभी पर भार डाला जाता है। तुम अगर दसवीं कक्षा की छात्रा हो और तुमसे चुम्बक पर जानकारी माँगी जाती है तो वह एक सीमा में ही होगी, जबकि ऊँची कक्षाओं में जाते–जाते इस संबंध में जानकारियाँ एवं विवरण असंख्य पन्नों में हो सकते हैं। इसलिए शिक्षकों की पढ़ाई पर भरोसा रखकर क्रम दर क्रम अपने कोर्स के अनुसार पढ़ना सीखना चाहिए, न कि एक ऊँची उड़ान लेने के लिए आवश्यकता से अधिक विवरण जो ऊँची कक्षा के लिए उपयुक्त है उन्हें इकट्ठा करने की कोशिश करनी चाहिए। यह भी एक प्रकार का संयम है यानि उपयुक्त बातों को लिखना एवं बोलना।

❖❖❖

पाठ की सफाई-धुलाई

बारिश के समय जो पत्ते हरे-भरे और चमकदार हो गए थे, बारिश खत्म होने के बाद धीरे-धीरे उन पर धूल बैठनी शुरू हो जाती हैं और कुछ दिनों में वे पूरे गंदे। इस समय पत्तों की सुंदरता ढकी हुई मालूम होती है जैसे इसकी देखभाल नहीं होती हो और न ही कोई इनका मसीहा। तुम्हारा लेखन भी इसी तरह से होता है, जब तक अभ्यास चलता रहा पाठ की सफाई-धुलाई होती रही, तुम्हारे सोच-विचार और जवाब देने के तरीके शुद्ध रहे और जैसे ही अभ्यास बंद हुआ सारी चीजों में एक आवरण चढ़ने की प्रवृत्ति आने लगी और एक दिन तुम भी धूल ग्रसित पत्तों की तरह अपनी चमक खो बैठती हो। अतः हमेशा अभ्यास और तत्परता से अपने को चमकाये रखना अपने आप में पूर्ण सजगता पैदा करता है।

❖❖❖

सभी का स्वाभिमान है

यह लोगों की आम प्रवृत्ति है कि बातों के दौरान अपना महत्व दूसरे पर दर्शाने की। इस तरह से उन्हें लगता है कि वे दूसरों पर हावी हो गए हैं। लेकिन इस तरह की एक तरफा आत्म केंद्रित बातचीत दूसरों को ठीक नहीं लगती क्योंकि सभी का स्वाभिमान है, सभी में कुछ न कुछ खासियत है तथा उपलब्धियाँ हैं। जब बातचीत में एक दूसरे की भावनाओं का संतुलन होता है तभी एक अच्छी बातचीत संपन्न होती है। अपने बारे में बताना कोई गलत बात नहीं है लेकिन उसे एक अनुभव की तरह बताया जाना चाहिए न कि अपना बड़प्पन सिद्ध करने के लिए। दूसरों पर हावी होने की प्रवृत्ति उन्हें चाँटा मारने तुल्य ही होती है।

❖❖❖

तुम्हारा शैक्षणिक स्नान

विद्यालय में पढ़ाई, घर लौटने पर पढ़ाई और यहाँ तक की सोते समय भी पढ़ाई के ही सपने। अब तुम समझ सकती हो कि वर्षों–वर्षों से तुम्हारा शैक्षणिक स्नान हो रहा है और आगे भी होता रहेगा। यह एक ऐसी योजना है, जिसमें हर दिन तुम पर शिक्षा और ज्ञान का एक आवरण रखा जाता है, जिसे कवच की तरह हमेशा–हमेशा अपने साथ लिये चलना है, मरते दम तक। फिर ऐसी योजना में तुम्हारे गंभीरतम जुड़ाव की आवश्यकता नहीं है क्या ?

❖❖❖

लोगों से तालमेल

जब भी तुम घटित हो रही चीजों, आसपास के माहौल और लोगों से तालमेल नहीं बैठा पाती तो वहाँ से दूर हट जाने या दूर रहने की तुम्हारी प्रवृत्ति होती है। ये ऐसी चीजें हैं जो प्रत्येक लोगों के साथ होती हैं, चाहे कम या अधिक मात्रा में। कोई अछूता नहीं इस तरह की मानसिक उठा–पटक से। लेकिन तुममें सरलता है सभी चीजों को समझने की समझदारी है, एक ज्ञान है इस तरह की परेशान करने वाली शक्तियों को ध्वस्त करने का तो फिर इन सब चीजों के बंधन से तुम स्वतंत्र हो जाती है। ये बाँधने वाली डोर तुम्हारे पीछे–पीछे लेकिन तुम बहुत आगे।

❖❖❖

एक अच्छी सुबह

जब बच्चे को पहला शब्द सिखाया जाता है गुड मॉर्निंग और उसके यह शब्द बोलते ही जैसे एक अच्छी सुबह उसके मुँह से बाहर निकल पड़ती है। पूरा परिवार उसके स्वर से खुश हो जाता है। हर बार इसी तरह से तुम्हारी उपलब्धियों में तुम, तुम्हारा परिवार और सभी लोग शामिल होते हैं। एक खुशी की पुकार असंख्य कानों में गूँजती है। इससे बड़ी और अच्छी चाह किसी की और क्या हो सकती है।

❖❖❖

ऐसी चीजों का विकास

एक पढ़े लिखे व्यक्ति में सभी चीजों को समझने और जानने की जागरुकता एवं तत्परता होती है। वह फूल की ओर देखता है और उसके सौन्दर्य का आनंद लेता है, उसे उगाना चाहता है, उसका नाम जानना चाहता है, उसके बीज चाहता है, उन बीजों को दूसरों को बाँटना चाहता है। ऐसी चीजों का विकास सिर्फ किताबों के पाठन से ही संभव है उसके बिना नहीं।

❖❖❖

रंग बदलते ही रहेंगे

तुम गर्मियों में ठंडी हवा, ठंडी बर्फ, ठंडी बारिश सभी को तो पसंद करती हो, लेकिन जाड़ों में बिल्कुल नहीं। नर्म घास पर तो तुम नंगे पांव भी चल लेती हो लेकिन सख्त सड़कों पर एक पल भी नहीं। तुम्हारी पसंद और नपसंद अपने आप ही तुम्हें सजग कर देती है और तुम सँभलकर काम करने लगती हो। तुम्हें सभी से मित्रता रखना और सभी को खुश रखने की जरुरत नहीं है क्योंकि सभी की मंशा पूरा करने में न तो तुम सक्षम हो और न ही तुम्हारे पास इतना समय। इसलिए जिन चीजों से तुम्हारे अध्ययन में जरा–सा भी नुकसान न हो उसी में रुचि लेना उचित है। लोग तो रंग बदलते ही रहेंगे, उनकी चिंता न कर अपने रंग में स्थायित्व लाने की अधिक चिंता करनी चाहिए।

❖❖❖

अनंत मनुष्यों के मस्तिष्क

किसी का इंजीनियर होना, डॉक्टर होना, वकील होना आदि ज्ञान के ही एक पन्ने हैं। यह ज्ञान जहाज है क्योंकि इसकी तहों में असंख्य युक्तियाँ हैं, जिनसे किसी भी कार्य का कुशलतापूर्वक सम्पादन होता है और इसका दायरा इतना विशाल है कि अनंत मनुष्यों के मस्तिष्क इसमें समाये हुए होते हैं।

❖❖❖

स्मृति चिन्हों के सहारे

तुम अनेक तरह के स्मृति चिन्हों के सहारे एक नयी जगह तक पहुँचती हो जैसे लैम्पपोस्ट, पनवाड़ी की दुकान, कोई सुंदर–सा घर, कोई बड़ा–सा पेड़, होटल आदि फिर मन में इसकी पहचान बन जाने के बाद तुम रास्ता कभी नहीं भूलती। हमेशा ये स्मृति–चिन्ह तुम्हारे साथी होते हैं, रास्ता भटकी भी तो इसके सहारे वापस पहुँच गयी। एक नये पाठ में भी बहुत तरह के भटकाव होते हैं लेकिन उनमें छुपे स्मृति चिन्हों से उनकी दूरियों को बाँटकर अंतिम छोर तक पहुँच सकती हो। ये स्मृति–चिन्ह यादों में रह जाते हैं और फिर तुम अपना पाठ भूलती नहीं।

❖❖❖

मापदंडों को पूरा करना

कौए, कबूतर या छोटे-छोटे पक्षी अगर नृत्य भी करें तो वो शोभा नहीं देगा, क्योंकि न ही उनके पास सुंदर-सुंदर बड़े पंख हैं और न ही इतना बड़ा आकार जो कि थिरकने पर कोई आकर्षण पैदा कर सके। जबकि नाचता हुआ मोर बेहद सुंदर लगता है क्योंकि दुनिया के सबसे सुंदर आकृति वाले बड़े-बड़े पंख उसके पास हैं तथा सुंदर फैलाव और कलात्मक भाव-भंगिमा भी है। इसलिए जो भी जिस क्षेत्र में अच्छा करना चाहता है, उसे उसी के अनुसार सही बैठते मापदंडों को पूरा करना होगा। जैसे एक वकील या राजनेता को जिरह और भाषण देने की कला में पूरा निपुण होना पड़ेगा वरना इस क्षेत्र में सफल होने की जरा भी गुँजाइश नहीं है।

❖❖❖

मित्र की तरह

किस दोस्त के घर के नक्कशी किये हुए सामान, खूबसूरत प्याले और साज–सजावट की तुम बहुत तारीफ करती हो, लेकिन जैसे ही उस दोस्त से झगड़ा हो जाता है, उसकी सारी चीजें तुम्हें बुरी लगने लगती है और उनके बारे में याद आने पर गुस्सा आने लगता है। इसी तरह से जब तक तुम विषयों को अच्छी तरह से समझती हो तो वे तुम्हें मित्र की तरह खुशी देते हैं लेकिन जैसे ही वे कठिन होते जाते हैं और तुम्हारी समझ में नहीं आते, मन ही मन तुम उनसे क्षुब्ध हो जाती हो और उन विषयों से जी कतराने लगती हो। यहाँ तक यह भी भूल जाती हो कि शुरूआत में वे तुम्हें कितने अच्छे लगे थे। लेकिन इस तरह से जल्दीबाजी में किसी विषय से मुँह मोड़ लेने पर एक अच्छे विषय को गहराई से समझ लेने पर जो सुख मिलने वाला था, उससे वंचित रह जाती हो।

❖❖❖

नाम भर बोलने से

एक बड़ी जगह का नाम भर बोलने से लोग आसानी से वहाँ तक पहुँच जाते हैं और उस जगह का विस्तृत पता नहीं देना पड़ता। पढ़ाई के दौरान भी ऐसी बातों का जब–जब जिक्र आता है जो जगह तुम्हारी देखी हुई हो या उस जगह के पास से तुम गुजर चुकी हो तो फिर उस विषय को समझने में आसानी होती है। इसलिए पढ़ाई के साथ–साथ जब बड़े–बड़े कारखाने, प्रयोगशालाएँ, निर्माण–स्थल, बड़े–बड़े स्मारक, खदानें, सभागृह, अस्त्र–शस्त्र, प्राकृतिक सौन्दर्य तथा बड़े–बड़े लोगों से मिलने का अनुभव होता है तो पढ़ाई और भी आसान हो जाती है।

❖❖❖

वह हार चुका होगा

जहाँ बहाव की गति धीमी है उस नदी को कौन पसंद करेगा। कुश्ती लड़ते समय खिलाड़ी अगर कौन से दाँव–पेंच इस्तेमाल किया जाए, यह विचार करने पर ही अधिक देर लगायेगा तो तब तक वह हार चुका होगा। गोली पाँव में मारे या सर पर, इतना भर सोचने तक शिकार हमसे दूर निकल चुका होता है। अतः बुद्धि या संचित ज्ञान का समय आने पर अगर तेजी से इस्तेमाल नहीं होता, तो हमारा सारा ज्ञान व्यर्थ चला जाता है। इसलिए भी वाकपटुता कई बार चमत्कारी सिद्ध होती है।

❖❖❖

सामूहिक तनाव में

सामूहिक तनाव में सभी का दुख एक जैसा होता है इसलिए लगता है कि हम एक साथ हैं और यह सोचकर सभी का दुख थोड़ा हल्का हो जाता है लेकिन व्यक्तिगत तनाव निजी झगड़ों या अपनी इच्छाओं के पूर्ण न होने के कारण उपजते हैं, उन्हें खुद ही दूर करना होता है। जैसे अन्न के अभाव में बहुत सारे लोग भूख से तड़प रहे हैं तो यह एक सामूहिक समस्या है लेकिन अगर अन्न के होते हुए भी कोई बीमार है तो यह उसकी व्यक्तिगत समस्या है। तुम एक शिक्षक से कक्षा में उत्पन्न हुई पढ़ाई से संबंधित सामूहिक समस्या का हल करने की उम्मीद रख सकती हो, लेकिन अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान का नहीं।

❖❖❖

समस्याएँ टुकड़ों-टुकड़ों

ज्यों-ज्यों तुम बड़ी होती जाओगी, देखोगी कि समस्याएँ टुकड़ों-टुकड़ों में अपना हल माँगती है। कई तरह की समस्याओं को तुम जब हल करती हो तब जाकर एक कार्य सम्पादित होता है। क्योंकि आधुनिक युग में एक कार्य को सम्पादित करने के लिए उससे जुड़े बहुत से काम करने होते हैं। जैसे एक पेड़ की सही देख-रेख के लिए उसमें नियमित रूप से पानी देना, खाद देना पत्तों को साफ रखना, उन पर दवा छिड़कना, जड़ों के आसपास की धरती को साफ रखना, अनावश्यक डालियों को काटते रहना आदि अनेक बातें सम्मिलित होती है।

❖❖❖

प्रश्नों को थोड़ा सा छिपाकर

कई बार परीक्षा में पूछे गए प्रश्न कुछ अजनबी किस्म के होते हैं। पहली नजर में लगता है जैसे ये हमारे पाठ्यक्रम में ही नहीं थे लेकिन ध्यान से देखने पर तुम्हें महसूस होगा कि वे प्रश्न तुम्हारे पाठ्यक्रम से ही हैं केवल प्रश्नों को थोड़ा सा छिपाकर या घुमावदार बनाकर पूछा गया है। कई बार एक ही प्रश्न में कई छोटे-छोटे प्रश्न छुपे होते हैं और सभी का संक्षिप्त उत्तर तुम्हें देना होता है। इससे तुम्हारी बुद्धिमत्ता का सही मूल्यांकन होता है कि तुमने उत्तर केवल कंठस्थ कर लिये हैं या पाठ को अच्छी तरह समझ कर ही उनका उत्तर दे रही हो।

❖❖❖

उपजाऊ भूमि

इस संसार में असंख्य घटनाओं का क्रम चल रहा होता है, जो कमजोर हैं वे और अधिक मजबूती की ओर बढ़ रहे होते हैं, जो मजबूत हैं और अधिक मजबूत और जो अभी बिल्कुल बीज की ही अवस्था में हैं वे अपने लिए एक उपजाऊ भूमि तलाश रहे हैं। इसलिए कौन बड़ा है या कौन छोटा सभी अपनी–अपनी अस्मिता की तलाश में है। हर कोई अलग–अलग तरह की आग अपने में सुलगाये हुए है।

❖❖❖

आने वाली समस्याओं को

पत्ते धीरे–धीरे निकलते हैं और कड़ी गर्मियाँ आने के पहले उसे सहने लायक अपने को बना लेते हैं। यह है एक तैयारी जिसे करने में पत्तों को कई दिन लग जाते हैं। तुम भी अगर आने वाली समस्याओं को पहचान लेती हो तो उसके निवारण के लिए तैयार रहती हो। अक्सर जीवन जीते हुए इन आने वाली समस्याओं से हम वाकिफ हो जाते हैं और धीरे–धीरे इसकी विभिन्नताओं को भी हम पहचानने लगते हैं।

❖❖❖

कमजोर छात्र में भी

एक कमजोर से कमजोर छात्र में भी अपनी रुचि का कोई न कोई विषय होता ही है और अगर वह उसे अच्छी तरह से पढ़ लिख लेता है तो वह असफल नहीं हो सकता क्योंकि उसके पास एक हुनर तो आ ही जाता है। फिर उसी रुचि से नजदीकी रखने वाली अन्य दूसरी चीजों को भी वह अब समझ सकता है जैसे एक चालक स्कूटर से मोटर साइकिल और मोटर साइकिल से कार चलाना सीख जाता है। इन कमजोर छात्रों के विकास की भी इसी तरह की कोई दिशा हो सकती है।

❖❖❖

अपनी ऊर्जा को समझो

दियासलाई की आग से सिगरेट भी जलायी जा सकती है और चूल्हे की आग भी। दोनों में एक ही तरह की ऊर्जा का सदुपयोग और दुरूपयोग दोनों हुआ। जब इस तरह की ऊर्जा की तुम स्वामिनी होती हो तो मन चाहे अच्छे काम तुम उससे करवा सकती हो और जब तुम इसे संभाल कर नहीं रख पाती तो यह अपने आप निम्न स्तर के कामों में लग जाती है और धीरे–धीरे यह तुम्हें नियंत्रित करने लगती है। इसलिए अपनी ऊर्जा को समझो और ईंधन की तरह इसका उपयोग करो, ताकि इसकी आग में प्राप्त ज्ञान पकता रहे प्रौढ़ होता जाए।

❖❖❖

एक परिवार के सारे लोग

एक परिवार के सारे लोग जब एक साथ जुटते हैं तो तुम पाओगी उनमें बहुत सारी समानताएँ हैं। जैसे चलने में, चेहरे में, बोलने में, सोचने में आदि। जैसे वे एक ही वृहद पेड़ की कई डालें हैं और सबमें एक ही महक है आम के वृक्ष की तरह। एक डाल की महक से भी मालूम पड़ जाता है कि इसका रिश्ता कौन से पेड़ से है। ठीक इसी तरह रसायन, पदार्थ विज्ञान, भूगोल या अन्य दूसरे विषयों से संबंधित वार्तालाप या पुस्तकों में भी ठीक इसी तरह की विशिष्ट गंध महसूस होगी। यह विशिष्टता सारे विषयों को एक–दूसरे से पृथक करती हैं। जैसे गंधक भर कहने से एक अलग तरह की अनुभूति हमें होने लगती है या फूल भर कहने से या तराजू भर कहने से मन की सारी उधेड़बुन उसी दिशा में शुरू हो जाती है और ये तीनों चीजें अलग–अलग विज्ञान के विषय हैं और इसका अपना एक निजी बोध है।

❖❖❖

लम्बी जिम्मेवारी का निर्वाह

एक बगीचे में बहुत सारे फूल और आसमान में असंख्य तारे ही सबके आकर्षण का केंद्र होते हैं। हृदय एक दो बार धड़क कर शरीर को जिंदा नहीं रख सकता है उसे वर्षों–वर्षों तक ऐसा करना होता है यानि एक लम्बी जिम्मेवारी का निर्वाह करना पड़ता है तभी उसका काम पूरा कहलाता है। अतः तुम्हें अपने काम लगातार करते रहने होंगे सतत् चीजों को सुधारने के प्रति जागरूक रहना होगा तभी इस जीवन के प्रति या लोगों के प्रति जो उत्तरदायित्व है उसका निर्वाह हो पायेगा। तुम एक लम्बी यात्रा में निकली हो और मरते दम तक यह यात्रा जारी रहेगी।

❖❖❖

विशाल वृक्ष में तब्दील हो सके

फूल तोड़ लेने या माला बना लेने के बाद एक माली को बहुत अधिक जल्दीबाजी होती है कि उसे उसके मालिक तक पहुँचा दिया जाए ताकि वे सूखने से बच जाए। इसी तरह की जल्दीबाजी तुम्हारे मन में भी होती है जब किसी विषय की अच्छी जानकारी तुम्हें हो जाती है और तुम दूसरों को यह बताकर अपना बड़प्पन सिद्ध करना चाहती हो। लेकिन ये बातें बिल्कुल आरंभ की है और तुम्हारे भीतर एक आधार बनाने की तैयारी होती है जैसे जमी हुई मिट्टी को खोदकर बाहर निकाला गया हो। अभी तो बहुत कुछ बाकी होता है एक बीज को पनपने देना है ताकि यह ज्ञान के एक विशाल वृक्ष में तब्दील हो सके। तुम्हें अपने शुरूआती आधार को सँभाले रखना है इसे छटपटाने नहीं देना है तभी पनपता हुआ वृक्ष हष्ट-पुष्ट होता जाएगा।

❖❖❖

पाठ की सुगंध

जब पानी में पैसे फेंके गए और फेंकने के साथ ही जिस बच्चे ने उसे पकड़ने के लिए छलाँग लगायी उसे पूरा अंदाजा हो जाना चाहिए कि पैसे किस ओर और कितनी तेजी से किस गहराई में बढ़ रहे हैं तभी पैसे और उसके हाथ एक जगह पर मिल सकते हैं वरन् नहीं। इसी तरह के होते हैं पाठ, वे कितनी गहराई में और किस दिशा में है उस पर नजर लगाकर, पूरी उत्सुकता से जब उन्हें खोजा जाता है तो वे तुम्हें प्राप्त हो जाते हैं वरन् पाठ का ज्ञान कहीं ओर, और तुम्हारा दिमाग कहीं ओर। बस तुम्हें पाठ की सुगंध की ओर भागना है, जैसे एक मछली चारे की गंध की ओर भागती है।

❖❖❖

जितने हम अधिक मजबूत होंगे

जब हमारे पाँव मजबूत होते हैं हम अधिक देर तक साइकिल चला सकते हैं, हाथ मजबूत हों तो देर तक लिख सकते हैं, आँखें मजबूत हो तो देर तक पढ़ सकते हैं, गला मजबूत हो तो बहुत देर तक भाषण दे सकते हैं आदि-आदि। इस तरह से जितनी हमारी ताकत होती है उसी के अनुसार हमारे अंग भी किसी न किसी कार्य में सक्रिय हो जाते हैं। इसलिए जितने हम अधिक मजबूत होंगे, उतना ही किसी भी काम को अधिक देर तक और अच्छी तरह से कर सकेंगे। अगर हम पूरी तरह से मजबूत होंगे तो यह हमारी मजबूती हमारे सारे कामों में दिखलायी देगी।

❖❖❖

अपनी ताजगी

तुमने कमल की कली वाली अवस्था के फूल को देखा होगा। इसकी सारी पंखुड़ियाँ एक क्रम में भीतर की ओर चिपकी हुई होती है। इन्हें हाथों से धीरे–धीरे खोलते जाना होता है और अंत में वे एक सुन्दर फूल का आकार ले लेती है। यह फूलों का खिलना एक कृत्रिम प्रक्रिया हुई जबकि प्रकृति अपनी सारी कलियों को स्वयं खोलती है, धीरे–धीरे डालियों पर सजाती है। ये जो फूल अपने से खिलते हैं उनकी चमक और उनकी खूबसूरती कुछ अलग ढंग की ही होती है जो जंगल के आजाद शेर में होती है। वही शेर चिड़ियाघर में शिथिल होकर अपनी ताजगी खो बैठता है। अतः जो भी सृजन दबाव में या जल्दीबाजी में होता और जो सृजन अपने आप तुम्हारे काम के प्रति लगाव के कारण उत्पन्न होता है, उसमें इसी तरह का फर्क दिखलाई देता है।

❖❖❖

प्रगतिशील दुनिया

तुम्हारे शहर में जो आज घट रहा होता है, दूसरे शहर में कुछ और होता है। तुम्हारे देश में जो घटनाएँ घट रही होती है वे दूसरे देश में कुछ अलग होती हैं। इस तरह से पूरी पृथ्वी पर घटने वाली सिर्फ एक दिन की घटना को अगर जोड़ दिया जाए इन घटनाओं को देखने, पढ़ने या जानने में तुम्हें वर्षों लग जाएँगे। इस तरह से तुम इस पृथ्वी पर मौजूद विविधताओं और हर पल घटने वाली नवीन घटनाओं को समझ सकती हो। इतनी प्रगतिशील दुनिया में टिके रहने के लिए, बिना आलस्य के अपने अच्छे प्रयत्न करने होंगे, तभी तुम भी एक प्रगति का हिस्सा बन सकोगी।

❖❖❖

पढ़ाई ही उनका घर हो जाती है

जो लोग बाहर काम करते हैं उनके मन में हमेशा एक तड़प होती है घर वापस जाने की और जब एक बार वे घर जाने का मन बना लेते हैं फिर दूसरा कोई भी आकर्षण उन्हें रोक नहीं पाता। जिसके भी दिल में पढ़ाई रम जाती है, फिर पढ़ाई ही उनका घर हो जाती है। वह हमेशा उसी की ओर लौटना चाहता है। जिस दिन भी पढ़ाई ठीक से नहीं हुई लगता है मन बिल्कुल रिक्त–रिक्त–सा। जैसे उसे आज भूखा छोड़ दिया गया, समय न देकर नाराज किया गया हो और वह इस कम मिले प्यार को बर्दाश्त नहीं कर पाता और तड़पता रहता है।

❖❖❖

प्रश्नों का निर्माण

किसी भी पाठ की महत्वपूर्ण चीजों से ही किसी भी प्रश्न का निर्माण होता है न कि साधारण से। छात्रों को साधारण और असाधारण या महत्वपूर्ण चीजों का ज्ञान धीरे–धीरे होता है। इसलिए वे प्रश्नों का निर्माण नहीं कर पाते बल्कि निर्मित प्रश्नों का ही उत्तर देते हैं।

❖❖❖

अपनी सीमा और क्षमता

एक आदमी अपनी एड़ी उठाकर और अपने दोनों हाथ ऊपर करके जितनी ऊँचाई तक छू सकता है यही उसके हाथों के पहुँच की सीमा है। इसलिए तुम्हें अपनी सीमा और क्षमता समझनी चाहिए तथा उससे अधिक कुछ करने के लिए उपयुक्त सहारों का चुनाव करना चाहिए। सही तरह की सहायक चीजें ही हमें उपयुक्त लाभ दिला सकती है वर्ना कमजोर चीजों का सहारा लेकर अपना समय व्यर्थ करना है। जैसे एक छड़ी बूढ़े आदमी का ही सहारा बन सकती है तुम्हारा नहीं। आकाश की ऊँचाई का अंदाजा हम तारों से करते हैं न कि आसमान में उड़ते पक्षियों से। सभी चीजों की अपनी–अपनी उपयोगिता है और उन्हें उनके लक्षणों के आधार पर चुना जाता है।

❖❖❖

एक अच्छे चित्र का निर्माण

तनाव के क्षणों में मन शब्दों को पकड़े रहता है, उनका प्रवाह धीमा हो जाता है और लयहीन भी। तुम देखोगी एक चित्रकार कितना तल्लीन होकर एक चित्र बनाता है, कोई दबाव नहीं कोई जल्दीबाजी नहीं बस एक अच्छे चित्र का निर्माण करना ही उसके संकल्प में होता है। कोई भी सृजन कार्य दबाव में सही नहीं हो सकता। प्रत्येक सृजन के लिए मस्तिष्क का खुला होना तथा आँखों का चिड़ियाँ बनकर भिन्न–भिन्न ऊँचाईयों में भ्रमण कर काम की चीजों का दर्शन कर उन्हें सृजनात्मक कार्य के लिए, सृजनकर्ता को उपलब्ध कराना जरूरी होता है।

❖❖❖

सही जगह पर बैठकर

काम करने की जगह कुछ अलग होती है और आराम करने की कुछ अलग। जब हम काम करने वाली जगह पर बैठते हैं तो काफी सतर्क हो जाते हैं और जो काम हमें पूरे करने हैं सिर्फ उसी की ओर अपना ध्यान लगाते हैं। कक्षा जैसी जगहों में जहाँ आराम की कोई गुँजाइश नहीं है, अगर कोई सोचता है कि वह वहाँ केवल विश्राम करता रहे और फिर घर जाकर पाठ को दोहरा लेगा, उसका यह चरित्र दर्शाता है कि सही जगह पर बैठकर जो काम किये जाने चाहिए, उस सबक को उसने ठीक से अभी नहीं समझा है। कक्षा में बैठ कर तुम्हें किसी भी स्थिति में शिथिल नहीं होना है। हमेशा चुस्त रहना है जैसे सैनिक जब काम में लगे रहते हैं तो उनका आचरण भी हमेशा हमारे ऊपर एक अनोखी छाप छोड़ता है।

❖❖❖

उत्तर पुस्तिका देखते ही

एक कुशल परीक्षक तुम्हारी उत्तर-पुस्तिका देखते ही अंदाजा कर लेता है कि तुम किस तरह की छात्रा हो। फिर उन्हें पढ़ते हुए अंक निर्धारित करता है। कई बार अगर तुम्हारी लिखने की शैली उबाऊ हो तो परीक्षक उसे पूरी तरह पढ़ भी नहीं पाता और तुम्हें कम अंक मिलते हैं। लेकिन अगर तुम्हारा लिखना रुचिकर होता है तो वह पूरे उत्तर को अच्छी तरह से पढ़ना पसंद करता है। इससे तुम्हें अच्छे अंक प्राप्त होते हैं। यह वैसा ही है जैसे एक मछली बेचनेवाला जितने साफ सुथरे तरीके से अपनी मछलियों को सजाकर रखेगा तथा चाकू भी सुंदर होगा, उतना ही वह अधिक से अधिक ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करेगा।

❖❖❖

सावधान रहना कितना जरूरी है

चींटी ऐसी चीज है जिसे हम देखना तक नहीं चाहते हैं, लेकिन वह हमारे प्रति इतनी मुस्तैद है कि जरा सा भी मीठा कहीं गलती से हमसे छूट जाता है कि वे उस पर धावा बोल देती है। यानि हमारी भूल पर कोई न कोई घात लगाये बैठा होता है जैसे चूहे, कौए, मकड़ियाँ, तिलचट्टे, बिल्लियाँ व अन्य लोग। इसलिए तुम्हें समझ जाना चाहिए कि तुम्हें सावधान रहना कितना जरूरी है। जरा सी भी तुम चूकी कोई दूसरा तुम्हारे हिस्से का फायदा ले जाएगा।

❖❖❖

जब तक हमारा शरीर ठीक रहेगा

शरीर के प्याले में ही बुद्धि रहती है। शरीर मर जाता है उसके साथ-साथ बुद्धि भी। यह वसीयत की तरह किसी के नाम नहीं लिखी जा सकती। अतः शरीर को मजबूत और अधिक दिनों तक टिकाऊ बनाये रखने पर ही बुद्धि उसमें ठहरी हुई रहेगी। जब तक हमारा शरीर ठीक रहेगा, तब तक इस बुद्धि का उपयोग कर पायेंगे, उसके बाद नहीं।

❖❖❖

सुदृढ़ आधार

एक मिट्टी का दीया कभी नष्ट नहीं होगा, केवल हमें तेल और बाती बार–बार बदलनी होगी। प्रकाश फैलता रहेगा। यह दीया यानि मिट्टी का आधार लेकिन कितना मजबूत कि आग तक को भी वर्षों–वर्षों तक सँभाले रहता है अपने–आप में। यह आधार भी सबसे कम मूल्य का तेल और बाती की तुलना में और हल्का फिर भी जमा हुआ एक जगह पर। न हवा के झोंके से डर, न पानी और न बिजली से। तुम भी जब अपनी जिन्दगी में एक सुदृढ़ आधार खोज निकालती हो तो फिर केवल तेल और बाती ही बदलनी होती है और जीवन यापन होता रहता है।

❖❖❖

उम्र का मेल न खाने पर भी

एक बकरे को इस बात का पता नहीं होता कि जो हाथ आज उसे चारा खिला रहे हैं वे ही कल उसे काट डालेंगे। इसलिए उसे बाहर छोड़ देने पर भी फिर वहीं वापस लौट आता है। इस तरह के बहुत सारे काम जाने–अनजाने में जानकारियों के अभाव में हम भी करते हैं और बाद में धोखा खा जाते हैं। इसलिए वैसे लोग जो तुम्हारे प्रति बहुत अधिक प्रेम का प्रदर्शन करें या उम्र का मेल न खाने पर भी मित्रता करना चाहे, उनसे सावधान रहना जरूरी है।

❖❖❖

बाहर की गंदगी छोड़कर

जब मेज पर सफाई न हो तो मक्खियाँ बाहर की गंदगी छोड़कर भी हमारे आस-पास मँडराने लगती हैं। शायद यह बताने के लिए कि यहाँ पर गंदगी मौजूद है। लिखते समय भी अगर तुम्हारे सोच में सफाई नहीं होती है तो मक्खियों जैसे बहुत सारे काट्कूट के निशान, लिखे हुए को बार-बार सुधारने पर बन जाते हैं, जो बहुत बुरे लगते हैं। यह साफ दर्शाता है कि तुम्हें अपने पाठ का अध्ययन फिर से अच्छी तरह से करना चाहिए।

❖❖❖

पैनापन

तुम्हारा एक विषय में भी कमजोर होना शरीर के एक अंग के कमजोर होने जैसा है और अगर हमारा एक अंग भी कमजोर हो जाएगा तो हमारा पैनापन कम हो जाएगा। जैसे शेर के नाखून हिले तो पंजे कमजोर और पंजे कमजोर तो पूरा शरीर ही कमजोर।

❖❖❖